एम.ए. राजस्थानी 2016 – 17

एम.ए. राजस्थानी के पूर्वार्द्ध एवं उत्तरार्द्ध में कुल 09 प्र न पत्र होंगे, जिनमें चार प्र न पत्र पूर्वार्द्ध में और पांच प्र न पत्र उत्तरार्द्ध में होंगे । सभी प्र न पत्र 100 अंकों के होंगे । प्र न पत्रों की समयावधि 3 घंटे होगी ।

नोट :– समस्त प्र न पत्रों के उत्तर का माध्यम राजस्थानी भाशा होगा ।

एम.ए. उत्तरार्द्ध

प्रथम प्र न पत्र	:	आधुनिक राजस्थानी काव्य
द्वितीय प्र न पत्र	:	आधुनिक राजस्थानी गद्य
तृतीय प्र न पत्र	:	काव्यभाास्त्र एवं पाठालोचन
चतुर्थ प्र न पत्र	:	वि ाश्ट साहित्यकार–ईसरदास, मीरां बाई, जनकवि गणे ालाल व्यास "उस्ताद" (कोई एक विकल्प)
पंचम प्र न पत्र प्रबंध / पाठ–सम्पादन	:	निबंध / लघु ाोध (कोई एक विकल्प)

एम.ए. उत्तरार्द्ध 2016–17

प्रथम प्र न पत्र : आधुनिक राजस्थानी काव्य

समय : 3 घंटे पूर्णांक : 100

अध्ययन क्षेत्र

1. आधुनिक राजस्थानी काव्य परम्परा का अध्ययन ।

2. आधुनिक काल की प्रारंभिक महत्त्वपूर्ण रचनाओं का विस्तृत अध्ययन ।
3. भाव, भाशा एवं ि ाल्प के बदलते स्वरूप के आधार पर आधुनिक रचनाओं का आलोचनात्मक अध्ययन ।

पाठ्यपुस्तकें

1. वीर सतसई : सूर्यमल्ल मीसण
2. बादळी : चन्द्र सिंह
3. राधा : सत्यप्रका ा जो ाी
4. लीलटांस : कन्हैयालाल सेठिया

अंक योजना

व्याख्या अंक $9 \times 4 = 36$

आलोचनात्मक प्र न अंक $16 \times 4 = 64$

प्रथम इकाई

चारों पाठ्यपुस्तकों में से एक–एक सप्रसंग व्याख्या पूछी जाएगी, इनमें आंतरिक विकल्प दिया जाएगा ।

(प्रत्येक व्याख्या हेतु 9 अंक निर्धारित होंगे) अंक $9 \times 4 = 36$

द्वितीय इकाई

वीर सतसई : सूर्यमल्ल मीसण, आलोचनात्मक प्र न आंतरिक विकल्प सहित । 16 अंक

तृतीय इकाई

बादळी : चन्द्रसिंह : आलोचनात्मक प्र न आंतरिक विकल्प सहित ।
16 अंक

चतुर्थ इकाई

राधा : सत्यप्रका ा जो ी : एक आलोचनात्मक प्र न आंतरिक विकल्प सहित ।
16 अंक

पंचम इकाई

लीलटांस : कन्हैयालाल सेठिया : एक आलोचनात्मक प्र न आंतरिक विकल्प सहित ।

16

अंक

पाठ्यपुस्तकें

1. वीर सतसई : सूर्यमल्ल मीसण, सं. पतराम गौड़, ई वरदान आि ाया, कन्हैयालाल सहल, प्रका ाक : बंगाल हिन्दी मण्डल ।
2. बादळी : चन्द्रसिंह, चांद जलेरी प्रका ान, जयपुर ।
3. राधा : सत्यप्रका ा जो ी, राजस्थानी ग्रंथागार, जोधपुर ।
4. लीलटांस : कन्हैयालाल सेठिया, कलकत्ता ।

अभिप्रस्तावित ग्रंथ

1. परम्परा : सूर्यमल्ल मीसण वि ोशांक तथा हेमांणी अंक ।
   प्रका ाक : राजस्थानी भाोध संस्थान, चौपासनी, जोधपुर ।
2. राजस्थानी की श्रेश्ठ कृतियां : माधोसिंह इंदा ।
3. वीर सतसई : डॉ. भांभुसिंह मनोहर, स्टूडेन्ट्स बुक कम्पनी, चौड़ा रास्ता, जयपुर ।

द्वितीय प्र न पत्र : आधुनिक राजस्थानी गद्य

समय : 3 घंटे पूर्णांक : 100

अध्ययन क्षेत्र

1. आधुनिक राजस्थानी गद्य परम्परा का अध्ययन ।
2. प्राचीन काल की महत्त्वपूर्ण रचनाओं का अध्ययन ।
3. आधुनिक गद्य विधाओं में निबंध एवं कथा साहित्य का वि ाष्ट अध्ययन ।

पाठ्यपुस्तकें

1. बुगचो : मूलदान देपावत
2. तास रो घर : यादवेन्द्र भार्मा 'चन्द्र'
3. आज री राजस्थानी कहाणियां : रावत सारस्वत : प्रेमजी 'प्रेम'
4. मेवै रा रूंख ? : अन्नाराम सुदामा

अंक योजना

व्याख्या अंक $9 \times 4 = 36$

आलोचनात्मक प्र न अंक $16 \times 4 = 64$

प्रथम इकाई

चारों पाठ्यपुस्तकों में से एक–एक सप्रसंग व्याख्या पूछी जाएगी, इनमें आंतरिक विकल्प दिया जाएगा ।

(प्रत्येक व्याख्या हेतु 9 अंक निर्धारित होंगे) $9 \times 4 =$ 36 अंक

द्वितीय इकाई

बुगचो : मूलदान देपावत : आलोचनात्मक प्र न आंतरिक विकल्प सहित । 16 अंक

तृतीय इकाई

तास रो घर : यादवेन्द्र भार्मा 'चन्द्र' : आलोचनात्मक प्र न आंतरिक विकल्प सहित । 16 अंक

चतुर्थ इकाई

आज री राजस्थानी कहाणियां : रावत सारस्वत : आलोचनात्मक प्र न आंतरिक विकल्प सहित ।

16

अंक

पंचम इकाई

मेवै रा रूंख ? : अन्नाराम सुदामा : एक आलोचनात्मक प्रश्न आंतरिक विकल्प सहित ।

16

अंक

पाठ्यपुस्तकें

1. बुगचो : सांखला प्रिन्टर्स, बीकानेर
2. आज री राजस्थानी कहाणियां : रावत सारस्वत, प्रेमजी 'प्रेम' साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली ।
   (पाठ्यक्रम में (कहानी सं.) 3, 4, 10, 12, 15, 16, 18, 22, 23, 24, 27, 28)
   (3. मास्टरजी, 4. गीतां रो बावळियो, 10. भारत भाग्यविधाता, 12. खजानो, 15, तगादो, 16. करड़ी आंच, 18. बरसगांठ, 22. संजीवण, 23. रजपूताणी, 24. अलेखूं हिटलर, 27. अमर मिनख, 28. सुकड़ीजता आंगणा)
3. तास रो घर : यादवेन्द्र भार्मा 'चन्द्र'
4. मेवै रा रूंख ? : अन्नाराम सुदामा ।

अभिप्रस्तावित ग्रंथ

1. आधुनिक राजस्थानी साहित्य प्रेरणा, स्त्रोत और प्रवृत्तिया : डॉ. किरण नाहटा, प्रका ाक : चिन्मय प्रका ान, जयपुर
2. मेवै रा रूंख ? : अन्नाराम सुदामा ।
3. पोथी दर पोथी : डॉ. किरण नाहटा ।

तृतीय प्र न पत्र : काव्य ाास्त्र एवं पाठालोचन

समय : 3 घंटे पूर्णांक : 100

अध्ययन क्षेत्र

1. भारतीय एवं पा चात्य काव्य ाास्त्रीय सिद्धान्तों का अध्ययन ।
2. विभिन्न काव्यरूपों का अध्ययन ।
3. राजस्थानी काव्य ाास्त्र और छन्द ाास्त्र का अध्ययन ।
4. पाठालोचन के सिद्धान्त एवं पाठसम्पादन की प्रक्रिया का अध्ययन ।

नोटः– इस प्र न पत्र हेतु पाठ्यसामग्री अभिप्रस्तावित ग्रंथों से प्राप्त की जा सकेगी ।

पाठ्यक्रम विशय सामग्री

इकाई 1 :– साहित्य का स्वरूप विवेचन, भारतीय एवं पा चात्य दृश्टि, साहित्य के तत्त्व, काव्य की

मूल प्रेरणा और प्रयोजन ।

इकाई 2 :– रस सिद्धान्त : रस निश्पत्ति, साधारीकरण,

अलंकार सम्प्रदाय, वक्रोत्ति सिद्धान्त (स्वरूप और भेद)

ध्वनि सिद्धान्त (ध्वनि का अर्थ और भेद)

इकाई 3 :– अरस्तू के काव्य सिद्धान्त (अनुकृति सिद्धान्त, विरेचन सिद्धान्त एवं काव्यरूपों का विवेचन), क्रोचे का अभिव्यंजनावाद, आई. ए. रिचर्ड्स के काव्य सिद्धान्त (मूल सिद्धान्त)

इकाई 4 :– राजस्थानी छन्दशास्त्र का परिचय, अलंकार, काव्य दोश

इकाई 5 :– पाठालोचन की परिभाशा, स्वरूप और सिद्धान्त

अंक योजना

इस प्र न पत्र में काव्यभाास्त्र के लिये 80 अंक तथा पाठालोचन के लिये 20 अंक निर्धारित है–

प्रथम इकाई

साहित्य भाास्त्र – एक प्र न आंतरिक विकल्प सहित । 20 अंक

द्वितीय इकाई

भारतीय काव्य भाास्त्र – एक प्र न आंतरिक विकल्प सहित । 20 अंक

तृतीय इकाई

पा चात्य काव्य भाास्त्र – एक प्र न आंतरिक विकल्प सहित । 20 अंक

चतुर्थ इकाई

राजस्थानी काव्य भाास्त्र – एक प्र न आंतरिक विकल्प सहित । 20 अंक

पंचम इकाई

पाठालोचन सिद्धान्त और प्रक्रिया – एक प्र न आंतरिक विकल्प सहित । 20 अंक

अभिप्रस्तावित ग्रन्थ

1. रस मीमांसा : रामचन्द्र भुक्ल
2. भारतीय साहित्य भाास्त्र : डॉ. मिथले ा तथा विमले ा कान्ति
3. साहित्य भाास्त्र री ओळखाण : गौरी भांकर प्रजापत
4. काव्य ाास्त्र एक भारतीय दीठ : डॉ. वेंकट भार्मा
5. समीक्षा सिद्धान्त : डॉ. राम प्रका ा
6. सीरजण री साख : डॉ. मदन सैनी
7. भारतीय पाठालोचन की भूमिका : डॉ. एस. एस. कत्रे
8. रघुवर जस प्रकास : किसना आढा प्रका ाक : राजस्थान प्राच्य विद्या प्रतिश्ठान, जोधपुर
9. राजस्थानी साहित्य मीमांसा : डॉ. माधेसिंह इंदा

चतुर्थ प्र न पत्र : वि िाष्ट साहित्यकार

समय : 3 घंटे **पूर्णांक : 100**

अध्ययन क्षेत्र

वि िाष्ट साहित्यकार के अध्ययन के संबध में तीन साहित्यकारों के व्यक्तित्व और कृतित्व को अध्ययन का आधार बनाया गया है। विद्यार्थी इन तीनों में से एक साहित्यकार का चयन करेंगे–

1. ईसरदास 2. मीरां बाई 3. जनकवि गणे ालाल व्यास ''उस्ताद''

पाठ्यपुस्तकें

प्रत्येक साहित्यकार के लिये निम्नाकिंत पाठ्यपुस्तकों का निर्धारण किया गया है, जिनमें से एक का अध्ययन करना होगा।

1. हरिरस : ईसरदास (कुल 50 पद)

2. मीरां पदावली– सं. भाम्भूसिंह मनोहर (पद सं. 1 से 101 तक)

3. जनकवि उस्ताद : सं. रावत सारस्वत, रामे वर दयाल श्रीमाली : प्रका ाक – राजस्थान भाशा प्रचार सभा, जयपुर।

अंक योजना

व्याख्या– 36

आलोचनात्मक प्र न– (16×4 = 64)

निर्धारित पाठ्यपुस्तकों में से चयनित साहित्यकार के अनुसार

प्रथम इकाई : व्याख्या– कुल चार, इनमें आंतरिक विकल्प दिया जाएगा (9×4=36) अंक

व्यक्तित्व एवं कृतित्व से संबधित आलोचनात्मक प्र न

कुल चार प्र न : इनमें आंतरिक विकल्प दिया जाएगा (16×4=64 अंक)

अभिप्रस्तावित ग्रन्थ

1. कलम रो उस्ताद	:	विजयदांन देथा
2. मीरां मुक्तावली	:	सं. नरोत्तमदास स्वामी
3. गणे ालाल व्यास ''उस्ताद''	:	(विनिबंध)
4. मीरां बृहत्पदावली	:	स्व. हरिनारायण पुरोहित
5. ईसरदास बाहरठ	:	(विनिबंध) प्रका ाक साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली

पंचम प्र न पत्र : निबंध / लघु ोध / पाठ सम्पादन

समय : 3 घंटे **पूर्णंक : 100**

निबंध

निर्दे ा (1)– इस प्र न में दस में से किसी एक साहित्यिक विशय पर निबंध लिखना होगा ।

निर्दे ा (2)– यह निबंध राजस्थानी भाशा में ही लिखना होगा ।

अथवा

लघुभाोध प्रबंध

लधुभाोध प्रबंध लिखने की अनुमति उसी नियमित विद्यार्थी को दी जाएगी, जिसने एम ए. पूर्वार्द्ध परीक्षा में 55 प्रति ात अथवा अधिक अंक प्राप्त किये हों ।

लघुभाोध प्रबंध हेतु विद्यार्थी को टंकित 100 पृश्ठों में लघु ोध प्रस्तुत करना होगा । इस भाोध प्रबंध का माध्यम भी राजस्थानी ही होगा। लघु भाोध प्रबंध किसी प्राध्यापक के निर्दे ान में तैयार किया जाएगा, जिसके लिये एक विशय निर्धारित किया जाएगा, जो राजस्थानी साहित्य से संबधित होना चाहिये ।

अथवा

पाठ सम्पादन

इस प्र न पत्र को वे ही नियमित छात्र दे सकेंगे, जिनके 60 प्रति ात अथवा अधिक अंक होंगे। पाठ सम्पादन कार्य हेतु विशय निर्धारण एवं मार्गद ान हेतु महाविद्यालय के राजस्थानी प्राध्यापक के मार्गद ान में ही कार्य करना होगा। पाठ सम्पादन हेतु वही हस्तलिखित ग्रन्थ स्वीकृत होगा, जिसके कम से कम 20 पृश्ठ हों तथा हस्तलिखित दो प्रतियां उपलब्ध हों। सम्पादन की पुश्टि के लिये हस्तलिखित प्रतियों के कुछ पृश्ठों की फोटो प्रति भी सम्पादन के साथ संलग्न किया जाना आव यक होगा। सम्पादन का कार्य राजस्थानी में ही किया जाना है।